5–3–67 ओमशांति रात्रीक्लास

ठतने ढेर बच्चे सिवाय बेहद के बाप के और कोई के हो नहीं सकते। यह संगमयुग का पार्ट ही सुहावना है।इस संगम पर ही सब पुरुषोत्तम बनते हैं।सभी मनुष्य मात्र तथा सभी जीव जन्तु जो भी रचना है वो कब दुःख नहीं देती।तुमसे यह प्रश्न पूछते हैं कि वहां जानवर घोड़े, गधे आदि नहीं होंगे?जबकि मनुष्य ही ऐसे नहीं होंगे तो जानवर ऐसे कैसे होंगे?वहां दुःख की कोई बात नहीं।बाप है ही दुःखहर्ता सुखकर्ता।सुख का वर्सा देते हैं।वहां यह बातें नहीं पढ़ते हैं कि हमने प्रारब्ध किससे पाई है।इस समय सब बातें पढ़ते हो।यहां है बेहद का पुरुषार्थ और प्रारब्ध। वो हद का पुरुषार्थ करते हैं।तो हद की ही प्रारब्ध बनती है।बेहद का बाप आते हैं तो सबकी प्रारब्ध सतोप्रधान बनाते हैं।जो फिर पार्ट बजाती तमोप्रधान बनती है।फिर बाप आकर सतोप्रधान बनाते है।।कोई पुरुषार्थ करते2 हट जाते हैं।फिर पुरुषार्थ करते हैं।यह अवस्था में .. ..होता ही है।इस समय तुम्हारे पुरुषार्थ से भविष्य की प्रारब्ध बनती है।बहुत अच्छी प्रारब्ध मिलेगी बाप को फालो करने से।अच्छा मददगार बनेंगे, सर्विस करेंगे।मुख्य है याद।याद में ही कमी है ;क्योंकि आधा कल्प देह अभिमानी बने हैं।अब देही अभिमानी बनना है।इसमें ही मेहनत है।पावन बनना है।नालेज तो सहज है।बाप को याद करना भी कोई मुश्किल बात नहीं है ;परंतु याद में माया विघ्न डालती है।नहीं तो बाप को छोड़े ही नहीं।पढ़ें भी जोर–शोर से ; क्योंकि जानते है कि बड़ी भारी कमाई है जन्म जन्मांतर के लिए, कल्प कल्पांतर के लिए।वर्सा बड़ा भारी है।सब तो विश्व के मालिक नहीं बनेंगे ना।चित्रों (की) एग्जीवीशन तो बहुत होती है ; परंतु वो है बर्थ नॉट ए पेनी।बायोग्राफी कोई की जानते ही नहीं हैं।तुम हर एक की बायोग्राफी को जानते हो।पुराने चित्रों का विलायत में बहुत रिगार्ड है।वास्तव में रिगार्ड होना ही चाहिए एक का।जिस ही बाप को सभी याद करते हैं।सबसे जास्ती दाम वाली चीज वो ही है।जैसे बाप खुद हीरे जैसा है तो बच्चे को भी हीरे जैसा बनाते हैं।तो उनका फरमान मानना चाहिए ना।वो कहते हैं कि फलानी जगह जाओ तो कहते हैं वहां गर्मी लगेगी।यह होगा।अरे, तुमको मत पर चलना है।बहाना देना है क्या?बाबा समझ जाते हैं कि तकदीर वाला नहीं है।श्रीमत श्रेष्ठ है ना।कहीं भी भेजें।सर्विस के लिए भी जाते हैं तो भी समझ जाते हैं कि श्रीमत पर नहीं चलते हैं।तो इनको कहा ही जाता है नाफरमानबरदारी।सो भी भगवान का फरमान नहीं मानते हैं।फरमानबरदार बनने से ही उंच पद पा सकते हैं।नाफरमानबरदारी बनने से क्या हाल होगा?दैवी गुण धारण करने हैं।नहीं तो बहुत सजा होगी।ओम।

6–3–67 रात्री क्लास – महिमा करते हैं शिवबाबा की ;क्योंकि उंच ते उंच वो ही है।सारी दुनियां तो ग्लानी करती है।हम भी ग्लानी करते थे ना सर्वव्यापी समझकर।अब पहचान कर उतनी महिमा करते हैं।बाप जब भारत में आते हैं तो भारत को वर्सा देते हैं। शिव जयंती का अर्थ ही है कि बाप की जयंती अर्थात् अपने वर्से की जयंती।बाप की जयंती तो जरूर बच्चों की भी जयंती।जयंती मनाने वाले सब बच्चे ही ठहरे ना।भारतवासियों ...तो क्या ; परंतु सबको मनानी चाहिए। शिवलिंग को तो सभी मानते हैं।तुम अभी समझते हो सबको बाप ने आकर वर्सा दिया है।सतयुग में है सुखधाम।बाकी सब शांतिधाम में हैं।अब तुमको समझाया जाता है कि अपने को शरीर से अलग समझो।मुझे याद करो।शिव नाम को भी जानते हैं। तुम जानते हो वो तो ना ही लिंग है ना ही.... है।वो तो बिंदी है।सिर्फ पूजा के ही लिए बड़ा बनाते हैं।शिव जयंती पर प्रदर्शनी में बताना चाहिए कि शिवबाबा है ही सबका बाप।हम हैं सालिग्राम।तो जरूर बाप हमको स्वर्ग का वर्सा देते होंगे।बाप को याद करो तो पावन बनकर पावन दुनियां का मालिक बन जावेंगे।शिवबाबा ने भारत को स्वराज्य दिया था।फि जन्म लेते2 पतित बन गये हैं।अब समय बहुत कम है।शिवबाबा कल्प2 आकर राजयोग सिखाते हैं।कहते हैं कि देह के सब धर्मों को भूल अपने को आत्मा समझ मुझे याद करो।सबकी वानप्रस्थ अवस्था है।अब भक्तिमार्ग मुर्दाबाद ज्ञानमार्ग जिन्दाबाद होता है।शिवबाबा ही स्वर्ग स्थापन करने वाले हैं।संगम पर ही राजयोग सिखाते हैं।बच्चों को यह फुरना लगा हुआ है।तुम ब्राह्मण कहते हो हम अपनी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं।ओम।